समर्पण

सर्पदंश और रेबीज़ के शिकार हुए लोगो को ...

Adapted from,

National Snakebite Management Protocol, Directorate General of Health Services, Ministry of Health and Family Welfare, Government of India, 2008.

Handbook on Treatment guidelines for Snake bite and Scorpion sting Tamil Nadu Health Systems Project, Health and Family Welfare Department Government of Tamil Nadu, Chennai. 2008

Guidelines for the management of snake-bites, World Health Organization.

WHO Guide for pre and post exposure prophylaxis of Rabies

Management of Scorpion Bite: Adapted from HS Bawaskar, MFC bulletin, page 7, aug-sep 2004

Emergency treatment of anaphylactic reactions: Guidelines for healthcare providers, Resuscitation Council, World Health Organization

The information provided in this book is for wider dissemination,
and may be used by anyone with due acknowledgement to
Jan Swasthya Sahyog, Ganiyari, Dist. Bilaspur (C.G.)

विषय–वस्तु

1. प्रस्तावना 01
2. किट का उपयोग कैसे करें 04
3. सर्प और सर्पदंश की जानकारी
    1. मुख्य जहरीले साँप 05
    2. साधारण साँप 06
    3. सर्पदंश की जुड़ी गलतफहमियाँ और तथ्य 07
    4. क्या करें क्या न करें? 09
    5. उपचार मार्गदर्शिका 10
        - ❒ प्राथमिक उपचार
        - ❒ अस्पताल में उपचार
4. बिच्छु डंक की जानकारी
    1. बिच्छु के बारे में 13
    2. लक्षण और संकेत 13
    3. उपचार मार्गदर्शिका 14
        - ❒ प्राथमिक उपचार
        - ❒ अस्पताल में उपचार
5. पागल जानवर और रेबीज़ की जानकारी
    1. रेबीज़ 16
    2. कैसे होता है रेबीज़ 16
    3. पशु और रेबीज़ 16
    4. उपचार 17
6. दतैया डंक और तीव्र ग्रहिता का आघात 20

प्रस्तावना

जानवर हमारे लिए कोई विशेष काम के लिए ही उपयोगी है ऐसा नहीं। जीवन चक्र को अबाधित रखने के लिए उनकी भूमिका अति महत्वपूर्ण है। भारत वर्ष में 70 हजार प्रतिशत आबादी ग्रामीण भारत का हिस्सा है, यहां तो पशु मनुष्य के जीवन के अभिन्न भाग है। जानवरों और इंसानों की दुनिया बिल्कुल एक ही होने के कारण यहाँ जानवरों का काटना एक बड़ी समस्या है। जब जानवरों और मनुष्य को एक ही जगह पर रहना हो तो जानवरों के काटे जाने की संभावनाएं तो ज्यादा होगी ही। हम पशुओं पर निर्भर होने के कारण इस समस्या को जड़ से मिटाना और जानवरों के काटे जाने को पूरी तरह रोका जाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। ग्रामीण भारत के स्वास्थ्य को निरंतर और अबाधित रखने के लिए जानवर से न काटे जाने के लिए प्रतिबंधात्मक कदम उठाना और काटे जाने पर तत्काल और सहीं उपचार करना अति आवश्यक है। यह सभी भारतवासियों का मूलभूत अधिकार है। परन्तु अपसोस की बात यह है कि इस विषय को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता और हर साल बहुत सारे किसान, मजदूर और ग्रामीण वासियों की संबंधित जानकारी के अभाव से मृत्यु हो जाती है। इस जानकारी का अभाव न सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रवासियों को है बल्कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों में भी पाया जाता है। यह पुस्तिका और किट जानवरों के काटे जाने की समस्या को सभी जानकारी के माध्यम से नियंत्रण में रखने की एक कोशिश है।

जानवरों में सबसे ज्यादा परेशानी सांप काटने की देखी गई है और उनके प्रति आकर्षण और डर भी बहुत है। अधिकांशतः जानकारो के अनुसार हर साल भारत में 5 लाख लोगों को सर्प दंश होता है जिसमें से 10 से 50 हजार मरीजों की हालत गंभीर हो जाती है। दूसरे किसी भी देश के तुलना में भारत में सर्प दंश की समस्या बहुत ही ज्यादा मात्रा में है।

अगर आंकड़ों पर ध्यान दें तो 2005 में सभी आकस्मिक मृत्युओं में 5 फीसदी मृत्यु सांप कांटे जाने से हुई है। बहुत से मरीज तो स्वास्थ्य सुविधा तक पहुंचने से पहले ही मृत्यु की अधीन हो जाते हैं। कुछ लोगों की घरेलू परंपरागत् और झोला छाप चिकित्सकों से उपचार कराने के कारण देरी होने से मृत्यु हो जाती है। सर्प दंश की समस्या तो सहीं जानकारी के माध्यम से काफी हद तक नियंत्रण में रखा जा सकता है। भारत में लगभग 270 प्रजाति के सांप पाये जाते हैं जिसमें से सिर्फ 40 किस्म के सांप जहरीले होते हैं। उनमें आधे से ज्यादा पानी में रहने वाले सांप हैं। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार 4 मुख्य जहरीले सांप है :-

1. नाग (डोमी)
2. करैत
3. रसैल्स वाइपर (जदर्रा)
4. सॉ स्केल वाइपर (फुरसा)

मध्य भारत में करैत से काटे जाने वाले मरीजों की संख्या ज्यादा पाई गई है। सांप का जहर विभिन्न रसायनों का मिश्रण है और अभी तक न सुलझा हुआ एक रहस्य है। शरीर पर होने वाले असर को अगर देखें तो सांप का जहर मुख्यतः खून पर असर, नसों और मज्जा पर या फिर दोनों पर असर करने वाला होता है।

सांप के काटने के डर के साथ-साथ उसके उपचार संबंधी बहुत कुछ भ्रांतिया है। और भ्रमित करने वाले तथ्य भी है। जैसे सांप बदला लेते हैं, सांप का जहर घी खाने से उतर जाता है इत्यादि। ऐसे गलत मान्यताएं और जानकारी लोगों की समझ से निकालना सर्प दंश के उपचार में सबसे बड़ी चुनौती है।

सर्प दंश पर के जरिए पूर्ण रूप से उपचार किया जा सकता है। लेकिन अस्पताल लाने से पहले उचित प्राथमिक उपचार मरीज के लिए लाभदायक होता है पर उसमें समय नहीं गवाना चाहिए।

स्तनधारी जानवरों के काटे जाने पर होने वाला रोग रेबिज (जलांतक) के नाम से जाना जाता है। और इस रोग की समस्या सर्प दंश के बाद दूसरी मुख्य समस्या है। सभी स्तनधारियों के काटे जाने पर रेबिज नहीं होता। रेबिज के विषाणु का फैलाव मुख्यतः जंगल के जानवरों से होता है। किसी भी वजह से उनका संबंध घरेलू जानवरों से होने पर और विशेषतः उनके काटे जाने पर घरेलू जानवरों में रेबिज के विषाणु प्रवेश करते हैं । ऐसे जानवर फिर उसका फैलाव मनुष्यों में करते हैं। जंगल के जानवर के काटे जाने पर भी मनुष्य में रेबिज हो सकता है।

साधारण शब्दों में रेबिज को दिमाग की बीमरी कह सकते हैं क्योंकि रेबिज से पीड़ित व्यक्ति अपना दीमागी संतुलन खो देता है। जानवर से काटे जाना और रेबिज के लक्षण दिखने का अवधि काटे जाने की जगह पर निर्भर होता है। जितना दिमाग से दूर उतना ही ज्यादा समय लगता है लक्षण दिखाई देने में।

रेबिज के विषाणु के वाहक कुत्ता, बिल्ली, बिघवा, बंदर, नेवला एवं कोलिहा ऐसे जानवरों के काटने पर उनके थुक के माध्यम से रेबिज के विषाणु हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। जो जानवर अपने नाखुन का इस्तमाल करके हमला करते हैं या उनके सिर्फ नाखुन से ही खरोज लगी तो उससे रेबिज होने की संभावना नहीं होती।

अगर किसी भी जानवर के काटने पर या नाखुन के खरोचनें पर चोटिल जगह को अच्छी तरह साबुन से 20 मिनिट तक धुलाई करने से बीमारी को अधिकतर मात्रा में नियंत्रण में लाया जा सकता है और समय पर सहीं उपचार किया जाये तो बीमारी को पूर्ण रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। ऐसा न करने पर रेबिज गंभीर और जानलेवा बीमारी साबित हो सकती है।

ग्रामीण भारत में बिच्छु डंक भी एक बड़ी समस्या है। 3 प्रकार के बिच्छु भारत में पाये जाते हैं। लाल बिच्छु सबसे खतरनाक होता है। साधारणतः पाये जाने वाले बिच्छु डंक से मौत होने की संभावना कम होती है। पर छोटे बच्चों में मृत्यु हो सकती है। बिच्छु डंक से बहुत ज्यादा दर्द होता है और उसका उपचार करना बेहद जरूरी है, अन्यथा कभी-कभी वो घातक साबित हो सकते हैं। हमारे देश के आंकड़ो के अनुसार हर साल 10 से 12 लाख लोगों को बिच्छु से डंक होता है जिसमें से 30 हजार लोगों की हालत उचित उपचार न मिलने से गंभीर हो जाती है। विकसित देशों में बिच्छु डंक के ऊपर अच्छी जानकारी उपलब्ध है। हमारे देश में इसका प्रयोग सभी स्तरों पे नहीं हो रहा है।

अफसोस की बात तो यह है, कि ग्रामीण मध्य भारत के और शुष्क प्रदेशों की इस समस्या के बारे में उचित प्रशिक्षण चिकित्सकों को भी नहीं दिया जाता। समय-समय पर इस बारे में सभी स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े लोगों को प्रशिक्षित करना बेहद आवश्यक है। बिच्छु डंक को अधिसूचित बीमारियों में लाना और उसके उपचार को समझना और समझाना ही उसके नियंत्रण की ओर एक ठोस कदम है।

मक्खियों के काटने की गिनती में सबसे आम लेकिन कभी-कभी खतरनाक और गंभीर रूप धारण करने वाले दंशों में जिनके प्रति लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए वो है भंवर, मधुमक्खी एवं दतैया का दंश। कुछ व्यक्तियों में ऐसे दंशों से तेज गति से आघात में जा सकते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए ऐसे मरीजों को कुछ समय तक विशेष निगरानी में रखना उचित होता है।

जानवरों से काटे जाना सामुदायिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक बेहद बड़ी समस्या है और उस समस्या को कम आंकना या वैसा न मानना उसकी गंभीरता को और बढ़ाता है। ''जन स्वास्थ्य सहयोग'' ने अपने अनुभव के आधार पर ग्रामीण भारत की समस्या के बीच काम करने वाले स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए यह किट बनाया है। इस किट के उपयोग से जानवरों के दंश और काटने से पीड़ित एक भी मरीज अगर सहीं और उचित उपचार से स्वस्थ हो जायें तो यह कोशिश सफल हो गई इसकी हमें खुशी होगी।

जन स्वास्थ्य सहयोग
गनियारी
जिला बिलासपुर (छ.ग.)

किट का उपयोग कैसे करें?

1. **पुस्तिका :-**

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ के तौर पर बनाई गई इस पुस्तिका में जहरीले-गैर जहरीले सांपों की, बिच्छुओं की, जलांतक के लिए कारण बनने वाले जानवरों की तस्वीरें, उनकी पहचान के लिए उपयुक्त जानकारी और जानवरों के काटने पर उपचार करने की विधि के बारे में सभी जानकारी को एक साथ दिया गया है।

2. **पोस्टर्स :-**

जनता के लिए उपयुक्त जानकारी को आकर्षक पोस्टर्स के रूप में बनाया गया है। जिससे जरूरी जानकारी को याद रखने में और तुरंत देखने में आसानी हो। सार्वजनिक स्थानों पर इन्हें दर्शाया जा सकता है।

3. **उपचार मार्गदर्शिका की सी.डी. :-**

1. **सर्पदंश :-**

सर्पदंश और उसके उपचार से जुड़े जानकारी को अच्छे से समझने के लिए फिल्म के रूप में तैयार किया है। इसका उपयोग लोगों का ध्यान जुटाने में और सामुदायिक स्तर पर जानकारी को अच्छे से देने के लिए हो सकता है।

2. **पागल कुकुर (कुत्ता) के काटने के बाद :-**

पागल कुकुर (कुत्ता) के काटने के बाद जरूरी उपचार विधि के ऊपर बनाया हुआ फिल्म सहीं ढंग से उपचार कैसे करें। इसके बारे में अच्छें से जानकारी समझाने में महत्वपूर्ण हो सकता है।

4. **कार्डस् :-**

जहरीले और गैर जहरीले जानवरों को पहचानना उनके उपचार में सबसे महत्वपूर्ण पहल है। इसी के ऊपर आगे का उपचार विधि पूर्णतः निर्भर होता है। डॉक्टर, स्वास्थ्य कार्यकर्ता और जनता को इसमें आसानी हो इसलिए सामान्यतः पाये जाने वाले 24 जनवरों के संबंध में जानकारी कार्डस् के रूप में तैयार की गई है।

अनुच्छेद - 1

सर्पदंश

करैत :

मध्य भारत में सबसे ज्यादा सर्पदंश की घटनाएं करैत के काटने से होती है। करैत व अन्य साधारण सांपों में ज्यादा अंतर न होने के कारण इसके उपचार में और पहचान में दिक्कते आती है। सिर्फ रात को ही घुमने वाले इस प्रजाति को उसके गाढ़े काले रंग और दुधिया सफेद बैंड से पहचाना जा सकता है।

नाग (डोमी) :

भारत में सभी जगह पे पाये जाने वाले साँप के प्रति आकर्षण और डर सबसे ज्यादा है। अपने हुड के प्रसार से शरीर को उठाके आक्रमण करना इसकी खासियत है। किसानों का दोस्त कहे जाने वाले इस साँप के बारे में फैली हुई गलतफहमियाँ इसके काटे जाने पर उपचार को देरी होने का प्रमुख कारण है।

जदर्रा :

भारत में दो प्रमुख जदर्रा (वायपर) पाये जाते हैं। चिट्टी, फुरसा इन अन्य नामों से भी इन्हें जाना जाता है। धब्बे वाले उनके शरीर और आक्रमण के अलग अंदाज की वजह से उन्हें पहचानना ज्यादा आसान होता है। दोनों साँप कुछ खास आवाज निकालकर आक्रमण करते हैं।

साधारण साँप

70 प्रतिशत सर्पदंश बिना जहर वाले साँपों से होते हैं

बांकी 30 प्रतिशत जहर वाले साँपों के काटने पर भी 50 प्रतिशत में जहर अंदर जाता है।
अन्य सिर्फ चमड़ी तक ही सीमित होते हैं।
भारत में साधरण रूप से पाये जाने वाले बिना जहर वाले साँपों की सूची नीचे दी गई है :-

Green Keelback
डालडोमी

Common Bronzeback Tree Snake
वृक्षसांप

Common Kukri Snake
कुकरी सांप

Checkered Keelback
डोड़वा

Common Rat Snake
अषड़िया, धामन

Indian Rock Python
अजगर

Common Wolf Snake
सामान्य कौरीयाला

Dog Faced Water Snake
डोडीया या ढोरीया

Sand Boa
खुरदुर दुम बोआ

Common Trinket
मांजरा

Banded Racer
पट्टेदार धावक

Painted Bronzebeck Tree Snake
चित्रित वृक्ष सांप

साँप के बारे में गलतफहमियाँ और तथ्य

गलतफहमी : साँप घिनौना और स्पर्श करने के लिए चिपचिपा होता है।

तथ्य : कोई सांप घिनौना नहीं होता। उनकी स्केल्स वास्तव में काफी चिकने और त्वचा आसानी से फिसलने वाली होती है।

गलतफहमी : सभी साँप नुकीले होते हैं और हर एक के काटे जाने से गंभीर चोट हो सकती है।

तथ्य : सभी साँप नुकीले नहीं होते और न ही सभी जहरीलें होते हैं और लोकप्रिय धारणा के विपरित कई सांपों के काटने पर चोट भी नहीं होती।

गलतफहमी : सांप अपनी आंखों से मनुष्य और पशुओं को सम्मोहित करते हैं।

तथ्य : यह सच नहीं है। सांप व्यक्ति या पशुओं को सम्मोहित नहीं कर सकती।

गलतफहमी : कुछ दूध पीने वाले साँप गाय या औरतों का भी दूध पीते हैं - (मुसलेड़ी)

तथ्य : गलत, कोई सांप दूध का शौकिन नहीं और जिन्हें ऐसा कहा जाता है वह भी साधारण सांपों के जैसा ही व्यवहार करते हैं।

गलतफहमी : साँप दूध पीता है।

तथ्य : सामान्य परिस्थितियों में साँप दूध नहीं पीता। दूध सांप के पाचन प्रणाली की प्राकृतिक आहार का हिस्सा नहीं। सपेरा आमतौर पर साँप को भूखे रखते हैं और तभी साँप दूध पीते हैं जब उन्हें कोई विकल्प नहीं होता। साँप जब भी प्यासे होते हैं तो पानी जरूर पीते हैं।

गलतफहमी : सांप संगीत पे नृत्य करते हैं ।

तथ्य : सांप संगीत सुन नहीं पाते और किसी भी संगीत की सराहना नहीं कर सकते। तथाकथित नृत्य सपेरा द्वारा किये गये आंदोलनों का जवाब होता है।

गलतफहमी : अगर उनके साथी को किसी ने मार डाला तो साँप बदला लेते हैं।

तथ्य : साँप का दिमाग पूरी तरह विकसित नहीं होता है, कोई भी साँप किसी से बदल लेने के लिए याद नहीं रख सकता। अपने साथी के कस्तूरी से आकर्षित होने के उसके स्वभाव के कारण वह उस क्षेत्र में दिखाई दे सकता है। पर बदले की भावना से वो कभी नहीं लौटता।

गलतफहमी : साँप अपने सिर पर मोती अथवा मणी रखता है।

तथ्य : कोई भी साँप ऐस मणी या मोती विकसित नहीं कर सकता।

गलतफहमी : सांप के काटे जाने पर झाड़फूक या प्रार्थना के द्वारा ठीक उपचार किया जा सकता है।

तथ्य : सभी साँप जहरीले नहीं होते, सभी जहरीलें सांपों के दंश भी प्राणघातक नहीं होते। झाडफूक के द्वारा ठीक होने वाले मरीजों में सभी को जहरीले साँपों नें नहीं काटा हुआ होता।

गलतफहमी : साँप का जहर घी खाने से उतर जाता है।

तथ्य : गलत, साँप का जहर ए.एस.व्ही. छोड़कर किसी भी औषधी से उतरता नहीं। सहीं मात्रा में दिया हुआ ए.एस.व्ही. मरीज के लिए बेहद किफायती होता है।

गलतफहमी : साँप अगर जहरीला हो तो कटे हुए व्यक्ति के मुंह से झाग निकलता है।

तथ्य : सभी दंश में ऐसा नहीं होता।

गलतफहमी : साँप अगर जहरीला हो तो कटे हुए व्यक्ति के मुंह से झाग निकलता है।

तथ्य : सभी दंश में ऐसा नहीं होता।

गलतफहमी : साँप काटने पर पीड़ित व्यक्ति को घर के दरवाजे से बाहर नहीं निकालना चाहिए बल्कि दीवार या छत तोड़कर बाहर निकाल सकते हैं।

तथ्य : ऐसा करने पर पीड़ित व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। क्योंकि यह सब करने में समय व्यर्थ चला जाता है।

क्या करें, क्या ना करें?

क्या करें :

1. धीमी गति से रक्त का बहाव और विष का फैलाव धीमा करने के लिए रोगी को दिलासा दें। सभी सांप जहरीले नहीं होते और जहरीले सर्पदंश के बाद भी सभी का जहर शरीर में नहीं फैलता।
2. रोगी को लेटाकर प्रभावित अंग दिल की तुलना में नीचे रखें।
3. काटे हुए शरीर के अंग को स्थिर रखकर यदि संभव हो तो एक पट्टी का उपयोग करके और इस भाग को हृदय के स्तर से नीचे की स्थिति में रखें।
4. पीड़ित व्यक्ति को लेटे हुए स्थिति में रखकर तत्काल अस्पताल ले आयें। लक्षण बनने तक का इंतजार नहीं करना चाहिए।
5 अगर जरूरी हो तो कृत्रिम सांस का प्रारंभ करें। यह करैत और नाग के काटने पर जीवन रक्षक साबित हो सकता है।
6. काटे हुए छोर से अंगुठियाँ, कंगन, जूते या अन्य दबाव करने वाले वस्तु को निकाले क्योंकि वहां पे सूजन हो सकती है।
7. यदि चिकित्सक के मुताबिक लक्षण दिख रहें हो तब **Anti Snake Venom** तुरंत शुरू करना चाहिए।

क्या ना करें :

1. किसी भी बंधन या सम्पीडन पट्टी को न लगायें। काटे हुए स्थान को ज्यादा कसकर ना बांधे।
2. जहर को निकालने के लिए चीरा देना या फिर जहर को चूसना उचित नहीं यह तरीका विष को दूर करने में अप्रभावी है और करैत के काटे जाने में गंभीर खून बहा सकती है।
3. रोगी को मादक पेय या एस्पिरिन नहीं दें।
4. काटने की जगह को धोने से विष तेजी से फैल सकती है इसलिए जख्मों को धोना नहीं चाहिए।
5. पीड़ित व्यक्ति को चलने फिरने न दें।
6. काटने की जगह पर बर्फ लगाकर इसे ठण्डा न करें।
7. सांप पकड़ने की कोशिश न करें, क्योंकि वह पकड़ने के चक्कर में किसी और को काट सकता है। यदि साँप को मार डाला गया है, तो उसे पहचान करने के लिए अस्पताल ले आयें।
8. अस्पताल छोड़के किसी भी अन्य जगह पर **Anti Snake Venom** नहीं दें।

सर्पदंश का उपचार

प्राथमिक उपचार :

1. मरीज को दिलासा देना/समझाना।
2. Nitroglycerin Oitment का उपयोग

   सर्पदंश के जगह पर Nitroglycerin Oitment का 2 इंच चौड़ा और 2 इंच लम्बा लेप लगायें। (लगभग आधी ट्यूब)

   यह जहर पे कोई उपचार नहीं सिर्फ उसके फलाव को रोकने की कोशिश है।
3. दंश लगे हुए अंग को फ्रैक्चर हुए अंग के समान परचाली बांधकर स्थिर रखें।
4. अस्पताल भेजने का जल्दी प्रबंध करें।
5. डॉक्टर को लक्षण के बारे में बताएं।

अस्पताल में उपचार :

1. **प्रारंभिक सम्हालना :**

   गंभीर जानलेवा लक्षणों से निपटना
   - ✦ सांस के रास्ते को सुरक्षित करना।
   - ✦ सांस ले पाना।
   - ✦ दिल की गति स्थिर करना।

   दर्द के लिए पैरासिटामॉल

   दांत के निशान पहचानना : इंजेक्शन टी.टी. लगाना
2. **पता करें :**
   - ✦ सांप काटने का समय?
   - ✦ क्या कर रहे थे?
   - ✦ प्राथमिक उपचार या पारंपरिक उपचार मिले?
   - ✦ कौन सा साँप था?
   - ✦ 20 मिनट वाला ब्लड टेस्ट?

3. **20 मिनिट में खून जमने की जाँच**

- ✦ साफ एवं सूखा टेस्ट ट्यूब लें।
- ✦ 5 मि.ली. खून निकालकर टेस्ट ट्यूब में डाले।
- ✦ 20 मिनिट तक सामान्य तापमान पर रखें।
- ✦ खून नहीं जमने पर हर 30 मिनिट में अगले 3 घंटे के लिए जाँच करें।
- ✦ 3 घंटे बाद हर 1 घंटे पर जाँच करें।

4. **तय करें क्या मरीज को ए.एस.व्ही. की जरूरत है :**

यदि शरीर में जहर का असर हों :-

- ✦ न जमने वाला खून।
- ✦ 20 मिनट वाले टेस्ट में खून न जमना।
- ✦ आँखे मूंदना
- ✦ मांसपेशियों में कमजोरी।
- ✦ अलग-अलग जगह से खून आना।

कांटने की जगह पर असर :-

- ✦ दर्द और सूजन - काटने की जगह पर या गांठों में।
- ✦ जख्म से पानी निकलना।
- ✦ काटने की जगह काला होना।
- ✦ आधे से ज्यादा भाग पर सूजन आना। (TOURNIQUET बिना)

5. **ध्यान रखें :**

देर से फैलने वाला जहर

- ✦ कई बार 6 से 12 घंटे बाद भी लक्षण नहीं आते (करैत, जदर्रा, इन सांपो के बच्चों को काटने से)
- ✦ यदि कोई जहर के लक्षण नहीं 24 घंटे निगरानी में रखें।

6. ए.एस.व्ही. से उपचार

जब देना तय हो जाए –

(1) 10 वायल ASV फ्रीज से निकालें।

(2) 1 एम्पूल Adrenaline निकालें।

(3) 1 बोतल 5% Dextrose/DNS की लें और उसका 300ml. पानी IV Set की मदद से निकाल दें।

(4) अब इस 5% Dextrose/DNS बोतल में एक-एक करके 10 वायल का ASV इसमें एक 10ml. के सिरिंज से डाल दें। अब यह बोतल ASV चढ़ाने के लिए तैयार है।

(5) यदि बच्चा है तो वजन करें। यदि वयस्क है तो 1 दो Insulin सिरिंज में बराबर 0.5ml. यानि 20 नम्बर तक Adrenaline भर लें। यदि बच्चा है तो टेबल के मुताबिक Adrenaline भरें।

(6) IV Drip चालू करें। Drip की गति 60 बूंद प्रति मिनट पर चलाएँ।

(7) ध्यान से देखें। यदि कोई खुजली, दधोरा या साँस में परेशानी हो तो ASV को रोकें।

(8) और फिर Adrenaline को कंधे वाले आँत में लगाएँ।

(9) घड़ी को देखें। Adrenaline को असर 8 मिनट में आना शुरू होगा और 15 मिनट में पूरा असर आ जाएगा। यदि अभी भी पूर्ण लाभ नहीं हुआ तो पुनः लगाएं।

(10) यदि Reaction ठीक हो जाए तो 15 मिनट बाद पुनः ASV शुरू करें, और एक घण्टे में सम्पन्न करें।

वजन (किलो)	अंक
5 किलो तक	2
5-10	4
10-15	6
15-20	8
20-25	10
25-30	12
31-35	14
36-40	16
41-45	18
46 किलो से ऊपर	20 अंक तक

रेफर करने से पहले :

1. 10 वायल ए.एस.व्ही. मिल गया हो।
2. ए.एस.व्ही. रि-एक्शन का उपचार हो चुका हो और हालत स्थिर हो।
3. नाक में दो रबर ट्यूब डल चुकी हो।

अनुच्छेद - 2

बिच्छु डंक

बिच्छु डंक

बिच्छू डंक एक जानलेवा आपातकानील स्थिति हो सकती है। विष का प्रभाव 5 साल से कम उम्र के बच्चों के बीच सबसे ज्यादा होता है। वयस्क भी बिच्छू डंक का शिकार हो सकते हैं यह एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, हालांकि जल्दी पहचान और उचित उपचार डंक के परिणाम को प्रभावित कर सकता है इसलिए बिच्छु डंक को विशेष ध्यान देना चाहिए और ऐसे मामलों को हल्के से नहीं लिया जाना चाहिए।

सर्पदंश के तुलना में बिच्छू का डंक 10 गुना ज्यादा हो सकता है। ऐसी स्थिति में बिच्छु डंक के मामलों की संख्या काफी बढ़ सकती है। बिच्छु डंक के कई मामले सामान्य चिकित्सक या पारम्परिक चिकित्सकों के उपचार पर निर्भर है और यह आंकड़ों में सामने नहीं आते।

अधिकांश बिच्छू डंक से होने वाले मृत्यु पहले 24 घंटो के दौरान होते हैं और श्वसन और हृदय की विफलता से होते हैं। बिच्छू डंक के कारण मौत 5 साल से कम उम्र वाले बच्चों में 25 प्रतिशत में होता है और अगर ईलाज नहीं किया गया तो बिच्छु के डंक केवल 1 प्रतिशत व्यस्कों के लिए घातक होते हैं।

लक्षण और संकेत :

लक्षण और संकेत बिच्छु, डंक और रोगी की स्थिति से प्रभावित होते हैं। बिच्छु डंक के सामान्य लक्षण इस प्रकार है :-

1. डंक के जगह दर्द और ऐसा महसूस होना की दर्द ऊपर की ओर बढ़ रहा है।
2. डंक के जगह लाल होना।
3. डंक के जगह उभरना।
4. डंक के जगह सूजन और संवेदना बढ़ना।

उपचार :

प्राथमिक उपचार :

1. दिलासा देना
2. Nitroglycerin Oitment का उपयोग

   बिच्छू डंक के जगह पर Nitroglycerin Oitment का 2 इंच चौड़ा और 2 इंच लम्बा लेप लगायें। (लगभग आधी ट्यूब) यह जहर पे कोई उपचार नहीं सिर्फ उसके फैलाव को रोकने की कोशिश है।
3. डंक लगे हुए अंग को फ्रैक्चर हुए अंग के समान स्थिर रखें।
4. अस्पताल भेजने का जल्दी प्रबंध करें।
5. डॉक्टर को लक्षण के बारे में बताएं।

अस्पताल में उपचार :

1. लक्षण पूछें :
   - ➦ क्या बहुत दर्द है?
   - ➦ क्या अत्यधिक पसीना आ रहा है?
   - ➦ बी.पी कम है या ज्यादा है?
   - ➦ क्या हाथ-पांव ठण्डे है?
   - ➦ क्या खांसी के साथ सांस तेज चल रहा है?

अत्यधिक दर्द :

1. Injection Fortwin 1mg./kg. IM
   1 मि.ली. = 30 मि.ग्रा. Fortwin होता है।
   अधिक से अधिक 30 मि.ग्रा. लगाएं।
2. Injection Phenargan 1mg./kg. IM
   1 मि.ली. = 25 मि.ग्रा. Phenargan होता है।
3. Ibuprofen/Paracetamol दें सकते हैं।
4. ऊंगली में काटने पर Xylocaine Injection दें सकते हैं।

3. **दर्द की दवा के बाद :**

- बी.पी. अत्यंत अधिक हो।
- बी.पी. सामान्य से कम हो।
- उल्टी आ रही हो।
- हांथ-पांव पर अत्यधिक पसीना हो।
- हांथ-पांव ठण्डे हो गये हो।
- खांसी के साथ सांस फूल रहा हो।

4. **तब** Prazosin **की दवा दें :**

Prazosin दवा की मात्रा

उम्र	मात्रा
वयस्क (12 साल से ऊपर)	1 मि.ग्रा. की 1/2 गोली
8 से 12 साल	1 मि.ग्रा. की 1/4 गोली
3 से 7 साल	1 मि.ग्रा. की 1/8 गोली

5. **ध्यान रखें :**

- खुराक के बाद बच्चे को गोदी में न उठाएं।
- गोली के बाद उल्टी हो तो दोबारा गोली दें।
- बच्चा बहुत ही व्याकुल हो तो Inj. Diazepam 1 मि.ली. देकर गोली दें।
- यदि सांस फूल रहा है तो तुरंत अस्पताल भेजें।
- हर आधे घंटे में बी.पी., हृदय की गति और सांस की गति नापें।
- ज्यादा से ज्यादा 4 खुराक की जरूरत होती है।
- O.R.S. खूब पिलाएं।

अनुच्छेद - 3

कुत्ता एवं जंगली जानवरों का काटना और रेबीज़

पागल कुकुर (कुत्ता) का काटना और रेबीज़

रेबीज़ एक 100 प्रतिशत घातक रोग है। विश्व स्वास्थ्य संगठन 2005 के अनुसार दुनिया भर में 55 हजार लोग रेबीज़ की वजह से मर गये हैं जिसमें से 20000 लोग भारत से हैं।

रेबीज़ को प्रतिबंधित किया जा सकता है। मौजूदा टीकाकरण एवं Immunoglobuline रेबीज़ के प्रतिबंध के लिए काफी किफायती साबित हुए हैं।

रेबीज़ के विषाणु जलांतक रोगियों की लार में और पागल जानवरों की लार में मौजूद होता है। काटने के बाद खरोच से विषाणु शरीर में प्रवेश करते हैं वहीं से मांसपेशियों में बढ़कर तंत्रिका तंत्र एवं नसों में प्रवेश करते हैं।

यहां से मस्तिष्क के ओर उनका सफर शुरू हो जाता है। रेबीज़ के कारण जलांतक (पानी का डर) वायुभीति (हवा का डर) और प्रकाश के डर से अंत में मौत हो जाती है। काटने के बाद मृत्यु का अवधि आमतौर पर 3 सप्ताह से 3 माह तक होता है।

भारत में रेबीज़ फैलाने वाले पशु

सबसे अधिक : **कुत्ते** और **बिल्ली**,

कभी-कभी : बंदर, गधे, घोड़े, जंगली पशु, नेवला, लोमड़ी, भेंड़

कभी नहीं : चूहे, चमगादड़ और पक्षी

रेबीज़ के लिए पशु का निरीक्षण :

रेबीज़ के लक्षण के लिए व्यक्ति को काटने के बाद 10 दिन के लिए जानवरों का निगरानी करना चाहिए। निगरानी के दौरान देखें :

1. पशु अपने सामान्य व्यवहार में परिवर्तन और अनुचित आक्रमण तो नहीं करता?
2. कुछ कारण के बावजूद चलते रहना और उत्तेजना के बिना दूसरों पर हमला।
3. बहुत सुस्त होना और एक कोने में जाकर बैठना।
4. अत्यधिक थूक निकालना।
5. आवाज में बदलाव।
6. सामान्य खाने से इंकार और पत्थर, लकड़ी, कागज खाना, पानी नहीं पीना।
7. पशु की मौत।

रेबीज़ विरोधी उपचार

रेबीज़ 100 प्रतिशत घातक है और उसपे कोई प्रभावी उपचार नहीं लेकिन रेबीज़ होने से पहले उचित उपचार से उसका रोकथाम हो सकता है। निम्नलिखित 4 घटकों पर ध्यान दें :-

1. घाव की देखभाल और उपचार

क्या करना चाहिए :-

बहते हुए पानी के नीचे कम से कम 20 मिनट तक सभी घाव को धोएं। साबुन या सेवलॉन जैसे एन्टीसेप्टीक का उपयोग करें। बाहरी परिस्थितियों में व्हीस्की, रम जैसे शराब या दाढ़ी के लोशन का उपयोग किया जा सकता है।

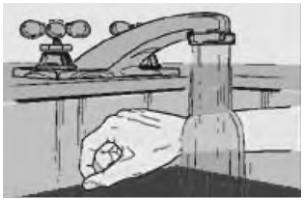

क्या नहीं करना चाहिए :-

1. घांव के ऊपर ड्रेसिंग न करें।
2. टिंचर आयोडिन का उपयोग न करें।
3. घाव को टांके नहीं डालनी चाहिए।
4. हल्दी, नीम, लाल मिर्च, पौधे का रस सिक्के आदि के उपयोग से विषाणु और फैल सकते हैं इसलिए इनका उपयोग नहीं करना चाहिए।

1. रेबीज़ का टीकाकरण Intradermal Route

यदि एक व्यक्ति को ही कुकुर (कुत्ता) काटने की परेशानी हो

इंजेक्शन	जगह	मात्रा	दिन
8	8	0.1 मि.ली.	शुरूवात
4	4	0.1 मि.ली.	7 दिन
1	1	0.1 मि.ली.	28 दिन
1	1	0.1 मि.ली.	90 दिन

यदि एक साथ 2 से अधिक व्यक्तियों को काटने पर

इंजेक्शन	जगह	मात्रा	दिन
2	2	0.1 मि.ली.	शुरूवात
2	2	0.1 मि.ली.	3 दिन
2	2	0.1 मि.ली.	07 दिन
1	1	0.1 मि.ली.	28 दिन
1	1	0.1 मि.ली.	90 दिन

Rabies Immuno Injection

- यदि III श्रेणी के घाव है - यदि चमड़ी कटी या फटी हो तो इम्युनो का इंजेक्शन लगाएं ।
- खुराक 40 यूनिट/कि.ग्रा.
- हर 1 मि.ली. में 300 यूनिट होते हैं।

वजन (कि.ग्रा.)	यूनिट	मात्रा
8-12	400	1.3 मि.ली.
12-16	600	2 मि.ली.
17-22	800	2.6 मि.ली.
23-26	1000	3.3 मि.ली.
27-32	1200	4 मि.ली.
33-40	1500	5 मि.ली.
41-45	1800	6 मि.ली.
46-50	2000	6.8 मि.ली.
50 से ऊपर	--	7 मि.ली.

- इसका कम से कम आधी मात्रा घाव की परतों में लगायें। और बांकी मांस में इंजेक्शन के रूप में लगायें।
- इंजेक्शन टी.टी. (0.5 मि.ली.) मांस में लगायें।

अनुच्छेद - 4

दतैया काटना और SHOCK

दतैया या भँवर काटने के बाद

- पान या पंख या बाल से डंक को ध्यान से निकाले
- दर्द के लिए पैरासिटामॉल दें।
- बी.पी. लें अगर बी.पी. कम है तो नस से नार्मल सलाईन दें।
- सी.पी.एम. की गोली उम्र के अनुसार दें।
- डंक के जगह पर सिरका या नींबू रस या मीठा सोड़ा का घोल पोनी (रूई) से लगाएं।

गंभरी आघात (SHOCK)

जब निम्नलिखित लक्षण या संकेत दिखे तो आघात का निर्देशन हो जाता है :

- अचानक से शुरूवात ओर तेजी से लक्षण बढ़ना
- श्वसन नलिका, श्वसन, रक्ताभिसरण में जानलेवा बदलाव। सांस लेने में अत्यंत तकलीफ हो, सांस नहीं ले पा रहा हो।
- चमड़ी में बदलाव
- रोगी को जिस चीज से एलर्जी है उससे संबंध

ध्यान में रखिये :-

- सिर्फ चमड़ी में बदलाव होना गंभीर आघात का लक्षण नहीं होता।
- लगभग 20 प्रतिशत लोगों में चमड़ी में कोई बदलाव नहीं होता या बहुत कम बदलाव होते हैं।
- रोगी को आघात के दौरान पेट में भी दिक्कत आ सकती है।

उपचार :

आघात के कारण को हटाएं

1. जिस दवाई की वजह से आघात हुआ है उसे हो सके तो बंद करें।
2. अगर दतैया काटने से हुआ है तो डंक को ध्यान से निकाले
3. अगर दवाई बंद करना किफायती नहीं है तो दवा को बंद नहीं करना चाहिए जैसे

ADRENALINE (1:1000 IM) दें

जब तकनीक और चिकित्सक उपलब्ध हों :-

- ✦ सांस का रास्ता खुला रखें।
- ✦ ऑक्सीजन ज्यादा मात्रा में दें।
- ✦ I.V. Fluid दें।
- ✦ Chlorphenarimine (CPM) दें।
- ✦ Hydrocortisone दें।

उम्र	मात्रा		
	Adrenaline	Chlorphenarimine	Hydrocortisone
6 से कम	0.15 ml.	2.5 mg.	15 mg.
6 से 12	0.3 ml.	5 mg.	100 mg.
12 से ऊपर वयस्क	0.5 ml. (1:1000 IM)	10 mg. IM/Slow IV	200 mg. IM/ Slow IV